छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में रस–योजना : एक अध्ययन

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर के कला संकाय के अन्तर्गत हिन्दी विषय में

पी–एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–प्रबंध की रूपरेखा

सन् – 2016

शोधार्थी

श्रीमती संगीता रंगारी

सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)

शास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय रामाटोला

जिला – राजनांदगाँव (छ.ग.)

शोध –केन्द्र

शास. विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.)

छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में रस –योजना : एक अध्ययन

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर के कला संकाय के अन्तर्गत हिन्दी विषय में

पी–एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–प्रबंध की रूपरेखा

सन् – 2016

शोधार्थी

श्रीमती संगीता रंगारी

सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)

शास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय रामाटोला

जिला – राजनांदगाँव (छ.ग.)

12-7-2016

शोध निर्देशक

डॉ. शैलेन्द्र कुमार ठाकुर

सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)

डॉ. खूबचंद बघेल शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय

भिलाई –3, जिला –दुर्ग (छ.ग.)

सह – निर्देशक

डॉ. अभिनेष सुराना

प्राध्यापक (हिन्दी)

शा.वी.वाय.टी.पी.जी. स्वशासी महाविद्यालय

दुर्ग (छ.ग.)

प्राचार्य

शास. विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.)

Principal
Govt. V.Y.T.P.G. Auto.College
Durg (C.G.)

छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में रस–योजना : एक अध्ययन

प्रस्तावना :–

छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य की लोकप्रिय विधा लोकगीत है। लोकगीत छत्तीसगढ़ी संस्कृति की प्राण वायु है। भारत वर्ष में छत्तीसगढ़ एक मेहनतकश अंचल के रूप में जाना जाता है। यहाँ का जनमानस परिश्रमी है। यहाँ के लोग खेती किसानी करते हैं। साथ ही ये सीधा एवं सरल रूप से जीवनयापन करते हैं। यहाँ के लोग बासी, पसिया खाकर भी उल्लासपूर्वक जीते हैं। अभावग्रस्त होने के बावजूद ये कभी कुंठित नही होते। ये आत्मविश्वासी होते हैं, और जीवन की पीड़ा को लोकगीत के रूप में महसूस करते हैं। यहाँ का लोक जीवन प्रेम रस, माधुर्य एवं संगीत के धुन से अनुरंजित है। यही प्रेम रस स्वर लहरियों के रूप में विभिन्न तीज–त्यौहारों, पर्वो एवं उत्सवों में दिखायी पड़ता है। यहाँ अलिखित साहित्य का भरपूर भण्डार है जिसका अधिकांश हिस्सा लोकगीतों के रूप में विद्‍यमान है। लोकगीत मानस मन के भीतरी भावनाओं के रूप में झरनों की तरह कलकल–कलरव करती बहती रहती है। इन लोकगीतों की अपनी धुन होती है जो साज के साथ मिलकर संगीत में परिवर्तित हो जाती है। संगीतबद्ध लोकगीतों को गायक अपनी गायिकी से प्रकृति की लय लेकर अपने भावों की अभिव्यक्ति को शब्द एवं सुर देता है जिसे सुनकर श्रोता प्रसन्नचित्त होकर बरबस ही झूमने नाचने लगता है।

सामाजिक जीवन के प्रत्येक पहलू का समावेश लोकगीतों में अभिव्यक्त है। मनुष्य में जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त तक विविध क्रियाओं का समावेश होता है। इन क्रियाओं को विशेष रसों से सिंचने एवं लोकजीवन को सुन्दरतम् बनाने हेतु मानव सभ्यता के आदिम युग से लोकगीतों का सृजन करता आ रहा है, जो हमें प्रसन्नता, आत्मिक शांति, आत्मिक आनंद प्रदान करने के साथ–साथ जीवन के विविध पहलुओं को भी दिशा प्रदान करते है।

संगीत मानव मन को झंझकृत कर देती है। यह वह अभिव्यक्ति है जिससे मन तरंगित हो उठता है। गीत वह कला है जिससे गायक अपनी कल्पनाओं एवं भावनाओं को लय, सुर, ताल के माध्यम से अभिव्यक्त करता है जिससे रस की उत्पत्ति होती है। लोकगायक एवं गायिका लोक को विभोर कर देने वाले गीत के माध्यम से मनुष्य के भीतर की पाशविक वृत्तियों अर्थात राग, द्वेष, लालच, ईष्या को दूर करने का प्रयास करता है ,उन्हें सत्यम्, शिवम् एवं सुन्दरम् की ओर ले जाकर आनन्द प्रदान करते है। सौन्दर्य ही कला की साधना है। सौन्दर्य के सिद्ध एवं परिपक्व होने से रस की उत्पत्ति होती है। इस प्रकार रस साहित्य, कला, गीत एवं शिल्प का मूल आधार है। प्राचीन मनीषियों ने मानव के मन मे विद्‌यमान विशिष्ट भावनाओं के चरमोत्कर्ष को ही रस कहा है। रस को एक प्रकार से चेतना भी कहा जा सकता है, जिसमें अन्तर्लीन हो जाने पर मनुष्य तनाव, चिन्ता, क्रोध, ईर्ष्या, द्वेश आदि से मुक्त होकर विशेष चेतना में तल्लीन हो जाता है।

लोकगीत जीवन में रस घोलते हैं, जीवन को स्पंदित करने का कार्य करते हैं। जिसे सुनकर इसकी मधुरता से श्रमिकों की थकान मिट जाती है। युवाओं में प्यार की कसक पैदा हो जाती है, बूढ़ों में एक नया जोश एवं उमंग की तरंगे उठने लगती है, तो बच्चे इसे सुनकर अपनी निद्रा पूरी कर लेते है। लोकगीत का नाम लेते ही हमारे अन्तर्मन में भावनात्मक और रसात्मक आनन्द की हिलोरे उठने लगती है। लोकगीत है ही इतना खुबसूरत कि इसे गायक तथा श्रोता सुनकर रस विभोर हो उठते है।

पूर्वानुसंधान :–

रस–योजना को लेकर छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में केवल दो शोध ग्रंथों में संक्षिप्त और परिचयात्मक चर्चा है –

1. छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का लोकतात्विक और मनोवैज्ञानिक अध्ययन – डॉ. हनुमन्त नायडू
2. छत्तीसगढ़ी के सुवागीत : साहित्यिक, सांस्कृतिक अनुशीलन – डॉ. जगदीशदास कुलदीप

इस तरह पूर्व में हुये शोध कार्य दिशा निर्देश बतौर ही प्राप्य है। छत्तीसगढ़ी लोकगीत का संकलन डॉ. पीसी. लाल यादव ग्राम – गंड़ई पंडरिया, हर्ष कुमार बिन्दु राजनांदगाँव, गोविंद साव संगीत–निर्देशक राजनांदगाँव, लोकगायिका श्रीमती कविता वासनिक अनुराग धारा राजनांदगाँव, श्री प्रभुलाल सिन्हा लोकगायक लालबहादुर नगर, लोकगायिका पूनम विराट राजनांदगाँव, लोकगीतकार श्री लक्ष्मण मस्तुरिया रायपुर, संगीत साधक एवं रचनाकर के.के.पाटिल भिलाई आदि लोगों के माध्यम से किया जा सकेगा।

शोध कार्य का उद्देश्य :–

छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा लोकगीत है। इस दृष्टि से पूरे देश में लोकगीतों पर प्रचूर परिमाण में कार्य हुए हैं। छत्तीसगढ़ी लोकगीत भी इसका अपवाद नही है। छत्तीसगढ़ी लोकगीतों के विविध पक्षों और उसके प्रकारों यथा– सुवा, ददरिया, पंथी, भोजली, फागगीत, डंडागीत, करमा, राउतनाच, बांसगीत, नेवरातगीत, मातासेवागीत, देवारगीत, जंवारा, चौकागीत, आदि पर स्वतंत्र रूप से शोधकार्य हुए हैं। लेकिन छत्तीसगढ़ी लोकगीतों को रस–योजना की दृष्टि से विवेचन का यह नवीन कार्य अभी तक नही हो सका था, इस दृष्टि से यह कार्य मौलिकता का प्रतिमान प्रमाणित होगा इसमें दो मत नही ।

प्रस्तावित शोध प्रविधि :–

छत्तीसगढ़ी लोकगीतों की रस–योजना विषय पर शोध प्रविधि का आश्रय निम्नलिखित क्रम से किया जायेगा –

1. छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का संकलन ।
2. छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का चयन।
3. छत्तीसगढ़ी लोकगीतों से संबंध शोधग्रंथों एवं शोधालेखों का संकलन।

4. छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य के मर्मज्ञों से विचार–विमर्श ।

5. शोध और समीक्षा निकष पर विवेचन।

6. चित्रावली।

प्रस्तावित शोध का कार्य क्षेत्र :–

छत्तीसगढ़ी लोकगीत पूरे छत्तीसगढ़ में प्रचलित है। इसलिए शोध कार्य हेतु छत्तीसगढ़ में प्रचलित लोकगीतों को अपने शोध के रूप में चुना है। इस विषय के शोध हेतु मेरा कार्यक्षेत्र छत्तीसगढ़ राज्य में प्रचलित छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का सर्वेक्षण होगा।

प्रस्तावित शोध का कार्य महत्व :–

साहित्य में रस को आत्मा कहा गया है। **''रसात्मक वाक्यं काव्यं''** से भी पता चलता है कि काव्य की पहचान रस–योजना से है। शिष्ट साहित्य में रस योजना पर कार्य हुये हैं लेकिन लोकसाहित्य विशेषकर लोकगीत में इस तरह का विवेचन अभी तक देखने को नही मिला है। इसी आधार पर मैने छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में रस–योजना को शोध का विषय बनाया है। इस दृष्टि से यह शोध जहाँ नई स्थापना को प्रकट करेगा। वहीं छत्तीसगढ़ी से अन्य लोकभाषा और बोलियों के साहित्य में इस तरह के अध्ययन को दिशा भी प्रदान करेगा ऐसी मेरी मान्यता है।

प्रस्तावित शोध प्रबंध का प्रारूप

छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में रस–योजना : एक अध्ययन

प्रस्तावना :–

1. विषय की व्याख्या
2. शोध का उद्देश्य
3. शोध का कार्यक्षेत्र
4. विषय पर हुए शोध कार्य का पूर्वानुसंधान
5. शोध सामग्री की उपलब्धता
6. शोध प्रविधि
7. शोध का प्रयोजन एवं उपादेयता

अध्याय 1 – अध्ययन विषय का सामान्य परिचय

1.1 छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का परिचय

(अ) लोक, लोकसाहित्य, लोकगीत का सामान्य परिचय

(आ) लोकगीतों का वर्गीकरण

1.2 रस का सामान्य परिचय

(अ) रस– अर्थ और अवधारणा

(आ) रसों के प्रकार

(इ) साहित्य में रस–योजना

अध्याय 2 – छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में श्रृंगार रस

अध्याय 3 – छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में वीर रस

अध्याय 4 – छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में हास्य रस

अध्याय 5 – छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में रौद्र रस

अध्याय 6 – छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में अद्‌भुत वीभत्स एवं भयानक रस

अध्याय 7 – छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में करूण, शांत एवं वात्सल्य रस

परिशिष्ट :–

1. स्वयं द्वारा प्रकाशित शोध पत्र –
2. छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का संकलन
3. संदर्भ ग्रंथ सूची
4. पत्र–पत्रिकाएँ
5. चित्रावली

संदर्भ ग्रंथ :–

1. अग्रवाल, अनसूया. हिन्दी लोक–साहित्य शास्त्र, दिल्ली : नीरज बुक सेंटर, प्रथम संस्करण.
2. अग्रवाल, अनसूया. 36गढ़ी लोक साहित्य अर्थ और व्याप्ति, रायपुर : शताक्षी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2011.
3. अग्रवाल, महावीर. लोक संस्कृति आयाम एवं परिप्रेक्ष्य, दुर्ग : शंकर प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1987.
4. चौहान, विद्या. लोकगीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि (भोजपुरी, अवधी, के संबंध में) आगरा : प्रगति प्रकाशन प्रथम संस्करण 1972.
5. दुबे, श्यामाचरण. परम्परा इतिहास बोध और संस्कृति नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन
6. गंगा, प्रसाद. छत्तीसगढ़ का साहित्य और उनके साहित्यकार, इलाहाबाद : रचना प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1972.
7. गुप्त, प्यारेलाल. प्राचीन छत्तीसगढ़ रायपुर : प्रकाशन पं.रवि.श.शु.वि.वि.
8. जैन, शान्ति. लोकगीतों के संदर्भ और आयाम, वि.वि.प्रकाशन वाराणसी : सन् 1993.
9. कुलदीप, लोकगीतों का विकासात्मक अध्ययन, आगरा : प्रगति प्रकाशन प्रथम संस्करण 1972.
10. कुमार, कीर्तन. छत्तीसगढ़ की कला एवं संस्कृति, कांकेर : प्रकाशन कांकेर साहित्य संस्थान, प्रथम संस्करण 2011.
11. नायडू, हनुमंत. छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का लोकतात्विक तथा मनोवैज्ञानिक अनुशीलन, नागपुर : विश्वभारती प्रकाशन, संस्करण 1986.
12. निरगुणे, बसंत. छत्तीसगढ़ी लोक संस्कृति, भोपाल : मध्यप्रदेश ग्रंथ अकादमी.

13. प्रसाद, दिनेश्वर. लोकसाहित्य और संस्कृति, इलाहाबाद : जयभारती प्रकाशन द्वितीय संस्करण 1986.
14. पाण्डेय, त्रिलोचन. लोकसाहित्य का अध्ययन, इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन प्रथम संस्करण 1978.
15. राय, शंकरमुनि. भोजपुरी लोक साहित्य में नारी, दिल्ली : प्रकाशन मित्तल एंड संस प्रथम संस्करण 2012.
16. शर्मा, रंजना. लोक–साहित्य चिंतन के विविध आयाम, कलकत्ता : आनंद प्रकाशन प्रथम संस्करण 2011.
17. शर्मा, पालेश्वर प्रसाद. शर्मा, अभिलाषा. छत्तीसगढ़ का सांस्कृतिक इतिहास, दिल्ली : प्रकाशन मित्तल एंड संस प्रथम संस्करण 2008.
18. शर्मा, हरद्वारीलाल. लोकवार्ता, उत्तरप्रदेश : हिन्दी संस्थान प्रकाशन प्रथम संस्करण 1990.
19. शुक्ल, दयाशंकर. छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य का अध्ययन, रायपुर : ज्योति प्रकाशन प्रथम संस्करण 1969.
20. शुक्ल, हीरालाल. लंका की खोज, इलाहाबाद : रचना प्रकाशन 16 संस्करण 1992.
21. शुक्ल, हीरालाल. आदिवासी संगीत, भोपाल मध्यप्रदेश : हिन्दी ग्रंथ अकादमी प्रथम संस्करण 2005.
22. सुधाकर, पूनम. भोजपुरी, लोकगीत एक अध्ययन, कानपुर : विकास प्रकाशन प्रथम संस्करण 2005.
23. शुक्ल, शिवशंकर. छत्तीसगढ़ी ददरिया, वैभव प्रकाशन रायपुर 2015.
24. तेंलग, भालचंद्र. छत्तीसगढ़ी, हल्बी, भतरी, बोलियों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर प्राईवेट लिमिटेड संस्करण 1966.
25. तिवारी, गीता. तिवारी, आभा. छत्तीसगढ़ी संस्कृति एवं परिवेश, रायपुर प्रकाशन सर्वोदय पेपर.

26. तिवारी, नंदकिशोर. शर्मा, सुधीर. छत्तीसगढ़ी कहिनी, छत्तीसगढ़ी साहित्य परिषद, बिलासपुर छ.ग.
27. तिवारी, रामकृष्ण. छत्तीसगढ़ का लोक संगीत, खैरागढ़ : मातृकला प्रकाशन.
28. उपाध्याय, कृष्णदेव. लोकसंस्कृति की रूपरेखा, इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन संस्करण 1988.
29. उपाध्याय, कृष्णदेव. लोकसाहित्य की भूमिका, इलाहाबाद : साहित्य भवन, संस्करण 2004.
30. उप्रेती, कुंदनलाल. लोकसाहित्य के प्रतिमान अलीगढ़ : भारत प्रकाशन मंदिर, संस्करण 1971.
31. वर्मा, शंकुतला. छत्तीसगढ़ी लोकजीवन और लोकसाहित्य का अध्ययन, इलाहाबाद : रचना प्रकाशन संस्करण 1971.

<u>अप्रकाशित शोध प्रबंध :–</u>

1. अग्रवाल, इन्द्राणी. छत्तीसगढ़ी नेवरात लोकगीतों का साहित्यिक,सांस्कृतिक, समाजशास्त्रीय एवं लोकतात्विक अध्ययन.
2. बैस, सुनीता. छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का समाज, भाषा, वैज्ञानिक अध्ययन.
3. केरकेट्टा, ज्योति. छत्तीसगढ़ के लोक साहित्य में सुआगीत.
4. महंत, संतोषदास. छत्तीसगढ़ के कबीर पंथीयों में प्रचलित चौकागीतों का अनुशीलन.
5. महंत, देवधर. छत्तीसगढ़ी करमा लोकगीतों का लोकतांत्रिक अनुशीलन.
6. पाण्डेय, जनार्दन प्रसाद. छत्तीसगढ़ी लोकगीतों की भूमिका.
7. शर्मा, रामानुजन. छत्तीसगढ़ी राउत नाचा के दोहों का अनुशीलन.
8. शर्मा, निशा. देवारगीतों का लोकतात्विक अध्ययन.

<u>पत्र–पत्रिकाएँ :–</u>

1. अहा जिन्दगी, मासिक पत्रिका, दैनिक भास्कर समूह.

2. चौपाल : साप्ताहिक परिशिष्ट, दैनिक समाचार पत्र हरिभूमि रायपुर.
3. मड़ई : साप्ताहिक परिशिष्ट, दैनिक समाचार पत्र हरिभूमि रायपुर.
4. साहू, दलेश्वर. लोक मड़ई स्मारिका 2001–2002.
5. साहू, लखनलाल. साहू , कुबेर. साकेत स्मारिका 2009.
6. पहट : साप्ताहिक परिशिष्ट, दैनिक समाचार, पत्र पत्रिका रायपुर.
7. सिंह, रामवीर. संपादक. गवेषणा, साहित्य चिंतन की शोध पत्रिका अंक 95/96 आगरा : केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा.
8. शर्मा, सुधीर. रिसर्च जनरल शोध प्रकल्प रायपुर : वैभव प्रकाशन.
9. तिवारी, नंदकिशोर. संपादक, छत्तीसगढ़ लोकाक्षर.
10. तिवारी, श्रीराम. संपादक. चौमासा, मासिक पत्रिका.
11. यादव, शोभा. संपादक. हमारा छत्तीसगढ़ रायपुर : प्रकाशन सहायता महिला मंडल शारदा प्रिंटर्स मार्च 2000.

12.07.16

शोधार्थी

श्रीमती संगीता रंगारी

सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)

शास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय रामाटोला

जिला – राजनांदगाँव (छ.ग.)

12-7-2016

शोध – निर्देशक

डॉ. शैलेन्द्र कुमार ठाकुर
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
डॉ. खूबचंद बघेल शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय
भिलाई –3, जिला –दुर्ग (छ.ग.)

सह – निर्देशक

डॉ. अभिनेष सुराना
प्राध्यापक (हिन्दी)
शा.वी.वाय.टी.पी.जी. स्वशासी महाविद्यालय
दुर्ग (छ.ग.)

12-7-16

प्राचार्य

शास. विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.)

Principal
Govt. V.Y.T.P.G. Auto.College
Durg (C.G.)

10